।। होली की रंगीन पिचकारी ।।

उस दिन ज्योतिषियों की एक गुप्त मिटिंग का आयोजन किया गया था । सभी लोग वंहा एक दूसरे के उपर अहसान जताते धीरे धीरे जमा होने लगे और आते गये । उनमें सभी नये और नौसिखिये ज्योतिषि थे और उन्हे देखने से ही लगता था कि सम्मान और प्रसिध्दी पाने के लिये उन्हौने बहुत चप्पलें घिसायी थी । सभी लोग अपने आपको बुध्दीमान और विद्वान सिध्द करने में लगे दिखाई देते थे । हालाकि अंदर से सभी डरे डरे और सहमे सहमे से थे । लेकिन आपस में जोर जोर से बातें कर रहे थे और अपने डर को छुपाने का प्रयत्न करते दिखते थे । इस तरह मिटिंग में सब्जी मण्डी का सा माहौल था ।

सभी लोग अपने अपने ढंग से अपना अपना ज्ञान बखान कर रहे थे । एक बात जो सबमें समान थी, वो ये थी कि वे लोग सोचते थे कि आज की मिटिंग में कुछ एसा होगा कुछ एसा नया होगा जो उनके लिये बहुत लाभदायक सिध्द होगा । इस एक बात को छोड़कर, वे और किसी बात पर एकमत नही थे । एसा कहें तो ज्यादा उचित होगा कि वे एक दूसरे के घोर विरोधी थे । कितनी भी उचित, युक्तिसंगत और सारयुक्त बात कोई कहे, उसका विरोध करना इनका धर्म था । ज्योतिष के क्षेत्र में होने के बावजूद, वे सब ज्योतिष के ज्ञान के अलावा, हर बात पर विचार विर्मश और बहस कर सकते थे । औरतो की तरह ताने देना और चुगलखोरी करना उनकी विशेषता थी । हालाकि औरतो का ये स्वभाव होता हैं परन्तु पता नही क्यों, इन ज्योतिषियों ने अपने स्वभाव में इस शाखा को उत्पन्न कर लिया था ।

दरअसल ये मिटिंग पम्मी-कांता नामक महिला के विरोध में थी जिसे सब लोग पीके गिरपड़े कहते थे । गिरपड़े उसकी सरनेम थी और पीके उसके बेटे बेटी का नाम था । पी अर्थात पम्मी और के अर्थात काँता, उसका खुद का क्या नाम था, किसी को पता नही था । दरअसल जबसे वो ज्योतिष के क्षेत्र में अपने व्यवसाय को फैलाने में लगी थी । उससे जो भी मिलने जाता था उससे वो अपने बेटे पम्मी और बेटी काँता की बात जरुर करती थी । ये उसका अपने बेटे-बेटी के प्रति मोह था, जो वो किसी से छुपाती नही थी । वो उनकी कुण्डली की बात करती उनकी पढ़ाई की बात करती और तो और वो आने वाले से अपने बेटे बेटी की प्रशंसा की आशा भी करती थी और अगर कोई ना करें तो उसकी खैर नही । वो ज्योतिष के क्षेत्र में ज्योतिष संबंधी पुस्तके और पत्रिकाऐं प्रकाशित करने का व्यवसाय करती थी । नये बने ज्योतिषियों की तिक्का बोटी वो खूब करती थी । प्रसिध्दी और सम्मान के मारे नये ज्योतिषि उसके पास जाते थे और अपनी इमानदारी अथवा कलम बेच कर ही वापस आते थे । फलस्वरुप वो अपनी पत्रिका में उनके नाम अथवा उनका फोटो छापकर उनपर अहसान किया करती थी । इसके बाद भी उसे बेटे पम्मी और बेटी काँता की प्रशंसा अवश्य ही करनी थी अन्यथा पत्रिका में नाम और फोटो की बात उसे भूल जानी चाहिये । इस तरह पम्मी-काँता, पम्मी-काँता ने उसका अपना नाम ज्योतिषियों से भुलवा दिया और सब लोग उसे ही पम्मी काँता कहने लगे और पम्मी-काँता से आहिस्ता आहिस्ता वो पीके गिरपड़े बन गई । जब कभी नाम पुछने पर वो 'पीके गिरपड़े' बोलती थी तो लोग भूलावे में समझते थे कि उसका पति शराब पीकर कंहि गिर पड़ा हैं और उससे हमदर्दी जताने लगते थे । इसे सुधारने के लिहाज से जब कभी वो अपना पुरानाम 'पम्मी-काँता गिरपड़े' बोलती, तो लोग समझते कि उसके बेटे बेटी कंहि गिर पड़े हैं ।

पम्मी काँता एक बुढ़ापे की तरफ बढ़ती बनठनकर रहने वाली औरत थी । जब जवान और नये ज्योतिषि अपना काम निकालने के लिये उसपर लाईन मारते थे तो वो और भी तनकर और अकड़कर व्यवहार करती थी । हालाकि अपने लाभ के अलावा उसने कंहि भी नम्र होना नही सीखा था । इस तरह ज्योतिषियों और ज्योतिष का वो बंटाधार किये दे रही थी और उसने मनमाने ढंग से ज्योतिषियों का कबाड़ा कर रखा था । सब उसके जुल्म से त्राहिमाम, त्राहिमाम कर रहे थे ।

बहरहाल फिर गलत मन्त्रोंचारण से मिटिंग का आरंभ हुआ, सभी लोग अपने अपने ढंग से मन्त्र पढ़कर स्वंय को विद्वान सिध्द करने के प्रयास करते दिखे । कोई हनुमान चालिसा का पाठ जोर जोर से करने लगा, कोई नवग्रह स्तोत्र पढ़ने लगा, कोई गायत्री जाप करने लगा और कोई कबीर के दोहे पढ़ने लगा । हाल ये था कि जिसकी डफली उसका राग वाली कहावत चरितार्थ होने लगी । अब समस्या ये हो गई कि कोई चुप होने को तैयार ही नही था । निंरतर उटपंटाग मन्त्र जाप चलने लगा । फिर कई लोगों को प्रार्थना पुर्वक चुप कराया गया परन्तु कुछ लोगों को चुप कराने के लिये बकायदा उनका मुँह दबाना पड़ा । एक गायत्री के जाप करने वाले को तो गला दबाने की धमकी देनी पड़ी अन्यथा वो गायत्री का पुश्चरण करने की सोचे बैठा था । बहरहाल सभी ने बड़े प्रेम से उटपंटाग मन्त्र पढ़कर अपनी विद्वता सिध्द की और मिटिंग के शुभारंभ की घोषणा हो गई ।

कई बुजुर्ग ज्योतिषियों और महिला ज्योतिषियों के प्रयासों के बाद वंहा सब्जी मण्डी का माहौल शाँत हुआ, मिटिंग आरंभ हुई । उनमें से एक मरियल सा लगने वाला ज्योतिषि, जिसका नाम सच्चानंद वडेरा था । सब उसे जानते थे, सच से उसका दूर का भी नाता नही था परन्तु फिर भी उसका नाम सच्चानंद वडेरा था । नजर का चष्मा लगाये और बहुत बुध्दीमानी का प्रदर्शन करता हुआ बोला, 'हम लोगों को पीके गिरपड़े का संदेशा मिला हैं, कि होली के इस पावन पर्व पर उन्हौने ग्रहों के यन्त्रों से छपी पिचकारियाँ बनाई हैं और वो चाहती हैं कि हम वे पिचकारियाँ खरीदकर अपने अपने क्षेत्र में बेचें और लोगों को समझायें कि इन पिचकारियों से होली खेलने पर उन्हे यश, मान, सम्मान और धन की प्राप्ती होगी ।'

वो पीके गिरपड़े के डर से हिला हुआ था फिरभी अपने आपको संभाले हुऐ था और उसने जोरदार ढंग से अपनी बात जारी रखी । 'नकल की हुई ज्योतिष की किताबें, हर मास बेकार की उलजलूल लेखों से भरी ज्योतिष की पत्रिका और विभिन्न किस्म के ग्रहों के यन्त्र तक तो ठीक हैं । ईन्हे बेचने के लिये हम लोगों को बेवकूफ बना लेते हैं । परन्तु अब ये यन्त्रों से छपी होली की पिचकारियाँ कंहा तक ठीक हैं ?

बोलते बोलते उसकी आँखों से आँसू निकल आये, आखिर डर ने अपना कमाल दिखा दिया था । बिल्ली के गले में घंटी बांधने की बात करने से ही उसका दम निकला जा रहा था । अगर कंहि उसे पीके गिरपड़े के सामने कर दिया जाता, तो शायद उसकी जान ही निकल जानी थी । इसी के चलते समझदारी दिखाने की कोशीश करते हुऐ दो ज्योतिषि उठे और सुहानूभूतिपुर्ण अंदाज में उसे सम्हालने लगे । इससे वो और मचलने लगा, मानो कुश्ती लड़ने वाला कोई पहलवान अभी हार मानने को तैयार नही था और अभी और कुश्ती लड़ने की तमन्ना रखता था । फिर दो ज्योतिषि और उठे और उसे जबर्दस्ती बिठा दिया गया । वो हांफता हुआ बैठ गया । सब लोग उसकी पतलून की तरफ देखने लगे । उन सभी को अंशका थी कि कंहि उसका सूसू ना निकल गया हो । बहरहाल एसा नही हुआ था । इससे सभी ने एक दूसरे की तरफ शान से देखा, जैसे ऐक दूसरे को दिलासा दे रहे हों कि उनका पहलवान हारा नही था ।

इसके बाद कामुक कुमार नामक एक और ज्योतिषि उठा और पहले उसने पीके गिरपड़े की शान में कसीदे पढ़ें । वो उम्र के लिहाज से पचास के पेटे में पहुचाँ उबड़ खाबड़ टाईप का अय्याश ज्योतिषि था । सब जानते थे कि वो पीके गिरपड़े पर लाईन मारने की कोशीश करता था और एसा जाहिर किया करता था कि जैसे पीके गिरपड़े उससे फंसी हुई थी । सब लोग गिरपड़े के खिलाफ कुछ सुनना चाहते थे इसलिये किसी को भी उसकी बात अच्छी नही लग रही थी । वो इस बात को मेहसूस कर रहा था इसलिये शान से बोला, 'लोग आजकल मुझे औरतों के साथ बहुत बदनाम करते रहते हैं । जबकि मैं इतना कमजोर हुं कि टट्टी के लिये जाता हुँ तो वंहा

से उठने के लिये भी मुझे किसी दूसरे के सहारे की जरुरत होती हैं ।'

तभी पीछे से किसी ने हाँक लगाई, 'बैठ जाओं टट्टीकुमार, ये तुम्हारे बस की बात नही हैं ।'

कामुक कुमार कुछ और बोलना चाहता था परन्तु माहौल अपने खिलाफ देखकर वो खिसियाया सा बैठ गया । अब सब लोग एकदूसरे की तरफ देखने लगे, मिटिंग का कोई सिलसिला ठीक से हो ही नही रहा था । फिर किसी ने कहा कि कोई महिला ज्योतिषि मिटिंग का आंरभ करे । सभी लोग महिलाओं की ओर देखने लगे और महिलाओं में खुसुर-पुसुर आरंभ हो गई । खुसुर पुसुर की आवाज मुर्गियों की कुड़-कुड़ में बदल गई और फिर अचानक लगने लगा जैसे कई मुर्गियां आपस में लड़ रही हो । इन्हे देखकर पुरुष ज्योतिषि एतराज करने लगे और उनके एतराज भी मुर्गो की तरह कुड़कुड़ाने की आवाज में बदलने लगे । कई पुरुष ज्योतिषि बड़े मुर्गो की तरह सुबह की बाँग देने की आवाज में चिल्लाने लगे । इस तरह वो मिटिंग मुर्गे-मुर्गियों के दड़बे में तब्दिल हो गई परन्तु फिर जैसे अचानक ये शोर शराबा शुरु हुआ था वैसे ही अचानक बंद हो गया, क्योंकि एक नाटी महिला कुछ बोलने के लिये खड़ी हुई थी ।

उसे देखकर सबने बुरा सा मुँह बनाया । उसे सब जानते थे, उसका नाम प्रितीबेन उर्फ छंटकी था । वो नाटी और हल्की फुल्की, फूंक से हिल जाने वाली गुजराती महिला थी और वास्तु ज्योतिष करती थी । लोग उसे छंटकी कहकर बुलाया करते थे । वो अपने छोटे कद से बहुत परेशान थी परन्तु ज्योतिष के विशाल क्षेत्र में अपना कद बढ़ाना चाहते थी ताकि लोग उसे 'छंटकी' के नाम से पुकारना बंद कर दे । इसलिये वो आजकल डॉक्टरेट का सर्टिफिकेट हासिल करने की जुगाड़ में थी ।

बहरहाल जैसे ही वो कुछ बोलने के लिये खड़ी हुई पीछे से आवाज आयी, 'अरे इसे पहले डॉक्टरेट का सर्टिफिकेट तो हासिल कर लेने दो, ये पिद्दी क्या बोलेगी ।'

सुनकर प्रितीबेन को फब्ती कसने वाला तो नही दिखा इसलिये वो शून्य में निहारती हुई परन्तु रोषभरे स्वर में बोली, 'एक्सक्युज मी, आपकी इन्फेंमेशन के लिये बता दुं, कि डॉक्टरेट का सर्टिफिकेट मुझे मिल चुका हैं परन्तु अपने नाम के आगे मैं लिखती नही हुं ।

'अच्छा', कंहि से आवाज आयी, 'तो अब लिखना शुरु कर दो । जब पिद्दी में ही मजा नही हैं, तो उसके शोरबे में क्या मजा होगा ।'

दूसरी आवाज आयी, 'हाँ, क्या पिद्दी, क्या पिद्दी का शोरबा ।' सब हँसने लगे ।

वों रुआँसी सी मुड़कर अपनी समर्थक सहेली से बोली, 'आई, टोल्ड यू ऑलरेडी, दे आर नॉट एबल टू लिसन माई व्युज ।'

उसकी सहेली ने हाथ पकड़कर उसे बिठा लिया । इस तरह मिटिंग फिर सब्जी मण्डी में बदल गई और मुर्गियों के लड़ने की आवाजें आने लगी ।

इसके बाद वंहा अचानक बन्दा चहेता ने प्रवेश किया । उसे भी सब जानते थे । वो शायद मिटिंग में देर से पहुचाँ था ।

सबको जैसे साँप सूंघ गया । कोलाहल शाँत हो गया । पचास साल की उम्र का वो बन्दा खूब बनाठना रहता था और उसका असली नाम मेवाराम चंदन था । वो मेवे की तरह ही चिकना चुपड़ा और खाने में स्वादिष्ट जान पड़ता था । असल में वो एक समलैंगिक था और ज्योतिष के क्षेत्र में क्या औरतें और क्या मर्द, कई लोगों के साथ वो यौन संबधों को लेकर बदनाम था । वो ज्योतिष के नाम पर एक धब्बा था । परन्तु अपने संबंधो के कारण और बनेठने रहने के कारण वो अधिकतर लोगों का चहेता था इसलिये उसका नाम 'बन्दा चहेता' पड़ गया था । कई लोग उससे डरते भी थे क्योंकि अपने मीठे और चिकने चुपड़े अदांज के कारण लोग उसके संम्पर्क में रहते थे और उससे बात करना चाहते थे । इससे वो अक्सर कई लोगों के फोन टेप कर लिया करता था । बाद में ईन्ही टेप किये फोन काल्स के कारण वो लोगों को ब्लैक मेल किया करता था । इसी की बदौलत वो किताबों, पत्रिकाओं और अखबारों में अपना नाम छपवा लिया करता था । पम्मी-काँता भी उससे डरती थी, अफवाह थी कि पम्मी-काँता के पति 'नयन गिरपड़े' से भी उसके यौन संबंध थे । अफवाह ये भी थी कि उसने अपने यौन संबंधो के विडियो टेप भी बना रखे थे और समय समय पर उसका ईस्तेमाल भी वो अपना काम निकालने के लिये किया करता था । लोग दबी जुबान में उसे गुलाबी ब्लैक मैलर भी कहा करते थे । एक अंग्रेजी अखबार 'फूल्स लाईव' ने तो उसे 'रोजी ब्लैक मैलर' का नाम दे रखा था । ज्योतिष का उसे जरा भी ज्ञान नही था, वो तो अपनी तिकड़मबाजी और ब्लैक मैलिंग के जरिये ज्योतिष के क्षेत्र में अपना दबदबा बनाने में सफल हो गया था ।

दरअसल उस मिटिंग में आये सभी ज्योतिषि, ज्योतिष के ज्ञान की तो बात भी नही करना चाहते थे । वे सब लोग प्रसिध्दी और सम्मान के लालची थे और उनकी इस कमजोरी का लाभ पम्मी-काँता और बन्दा चहेता जैसे लोग उठाने की फिराक में रहते थे । कहा गया हैं कि 'जंहा लोभी होगें, वंहा ठग भी जरुर होगें' । ठगों के इस बाजार में ये ज्योतिष की मिटिगें होती भी इसिलिये थी कि अपने आपको ठगाये जाने के लिये किसी छोटे ठग को तलाशा जाये और अपने आपको ज्यादा हानि से बचाया जाये । प्रसिध्दी और सम्मान के लिये अपने आपको सभी ठगाने को तैयार थे बस बुध्दीमानी ये थी, कि ये मौका किसी छोटे ठग को दिया जाये । विद्वता और ज्योतिष को तो सबने भाड़ में झोंक रखा था ।

बहरहाल गलती से जिन दो, तीन सच्चे विद्वान ज्योतिषियों को वंहा आंमत्रित कर लिया गया था । वे एक कोने में किसी निरीह मेमने की तरह बैठे थे और ये मिटिंग का नाटक देख रहे थे तथा आशा कर रहे थे कि उन्हे भी इस मिटिग में बोलने का मौका दिया जायेगा । कितने नादान थे वे लोग ।

बन्दा चहेता के लिये मंच पर एक कुर्सी खाली की गई । चाहे उसके डर से ही सही अथवा औपचारिकता के नाते ही सही, उसे मंच पर बैठाया गया । वैसे मिटिंग के आरंभ में मंच पर बैठने के लिये भी सभी आये हुऐ ज्योतिषियों में जबर्दस्त कबड्डी हुई थी । अंत में जो कमजोर साबित हुऐ और जो अत्यंत नये थे उनसे जबरन मंच के बैठक का त्याग कराया गया और कुछ छटे हुऐ और काँइया ज्योतिषि मंच पर बैठने में कामयाब हुऐ । जो दो तीन सच्चे और विद्वान ज्योतिषि आये थे उन्हे तो हिकारत से दूर खदेड़ दिया गया ।

आनन फानन फिर मिटिंग आरंभ हुई और गंम्भीर सा दिखने वाला हल्का फुल्का ज्योतिषि उठा और मंच की ओर मुखातिब होकर बोला, 'हम लोग नये ज्योतिषियों का एक शिष्टमंडल बना रहे हैं और चाहते हैं कि उसका मुखिया बनकर आपमें से कोई हमारे साथ पीके गिरपड़े के पास चले और उन्हें समझायें कि, यन्त्रों से छपी होली की पिचकारियाँ हम नही बेच सकते, कंहि एसा ना हो कि हम ये पिचकारियां बेचने जायें और लोग हमारी पिचकारी बनाकर हमे एसा दबायें कि हमारे अंदर का सबकुछ बाहर निकाल दें । सबने सोचा उस मरियल के अंदर से बाहर निकलने को था ही क्या ?

पलक झपकते ही बन्दा चहेता समझ गया कि वे लोग उसे बिल्ली के गले में घन्टी बाँधने का काम सौंपने वाले थे । मंच पर उपस्थित कोई भी ज्योतिषि इतना साहस नही रखता था कि वो पम्मी-काँता के पास जाकर उसे समझा सकता था । अंतत उसे ही ये काम सौंपा जाने वाला था । उसे जल्दी से कुछ करना था अन्यथा ये लोग उसका काम नही बनने देने वाले थे । वो तो यंहा आया था पम्मी-काँता का जासूस बनकर । उसे तो यंहा मिटिंग मे चल रही गतिविधियों की जानकारी उसे देनी थी

। उसके जवाब में पम्मी-काँता अपनी पत्रिका के आने वाले 'होली अंक' में प्रथम पृष्ठ पर उसका रंगीन फोटो छापने वाली थी ।

सारी स्थिति को भाँप लेने के बाद बन्दा चहेता उठा और मिंटिग को संबोधित करने के अंदाज में बोला, 'आदरणीय ज्योतिषगण, आपकी समस्या सचमुच गम्भीर हैं और मुझे आपके लिये कार्य करने में प्रसन्नता होगी ।'

दूर कोने में दो ज्योतिषि आपस में कानाफूसी कर रहे थे । 'साला कहता हैं, आपकी समस्या गम्भीर हैं, जैसे इसका हमसे कोई लेना देना ही नही ।'

उधर बन्दा चहेता बोल रहा था । 'इसके लिये हमे पम्मी-काँताजी से ही मिलना चाहिये ।'

तभी एक जोशीला ज्योतिषि खड़ा हुआ और बोला, 'हम गये थे उनके पास उन्हौने हम सब लोगों से अलग अलग बात की और नतिजतन हम लोग आपस में ही झगड़ पड़े और एक दूसरे के कपड़े फाड़ डाले । परन्तु वो महिला अपनी काँजीवरम की साड़ी संभालती और दिलकश अदा से मुस्कराती हम लोगों को दरवाजे तक विदा करने आयी और बोली, 'फिर आना ।' और हम लोग अपने बचे खुचे कपड़े सभांलकर वंहा से भाग खड़े हुए । अगर हम लोग दूसरी बार वंहा गये तो समझ लिजिये कि वो हमको नंगा करके ही मानेगी ।

बन्दा चहेता ने उसे घूर कर देखा तो वो ज्योतिषि घबराकर तुरन्त बैठ गया और उसने तुरन्त ही गलत ढंग से 'हनुमान चालिसा' का जाप करना आरंभ कर दिया, उसे लग रहा था कि उसने खामख्वाह ही मुँह फाड़कर अपनी कमबख्ती बुला ली थी ।

फिर बन्दा चहेता ने अपनी जान छुड़ाने के लिये पम्मी-काँता के पति 'नयन गिरपड़े' का नाम सुझाया और बोला, 'देखें, ये काम उनके पति ज्यादा अच्छे ढंग से कर सकते हैं । वो हैं भी ज्योतिष के प्रति समर्पित पुरुष ।' जवाब में फिर एक साहसी ज्योतिषि खड़ा हुआ और बोला, 'वो तो उन लोगों की तलाश में रहते हैं जो लोग पीके गिरपड़े की नजर से बच जाते हैं । रही बात हमारी, तो हम गये थे उनके पास । वो बोले, आपके लिये पीके गिरपड़े जो कुछ कर रही हैं वही सच्ची ज्योतिष की सेवा हैं । वो जैसा कहती हैं वैसा ही किजिये ।

भाई साहब, वो तो शिकार के लिये हाका लगाने का काम करते हैं । शिकार अगर शिकारी से दूर जा रहा हो तो वो हाका लगाते हैं और शिकार फिर सीधे शिकारी के चगुंल में जा फंसता हैं । परन्तु हम लोग इस बार शिकार नही बनने वाले ।' कहकर वो ज्योतिषि आवेश की अधिकता से थर थर काँपने लगा ।

बन्दा चहेता ने उसकी कमजोरी को भाँप लिया और बोला, 'आप सब लोग केवल बातें ही करते हैं । मेरा कहा माने और शाँत रहें । आपमें से जो साहसी और ज्योतिष के प्रति समर्पित व्यक्ति हैं, वो कृपा करके अपना नाम मुझे बतायें ताकि मैं उसकी मिटिंग पम्मी-काँताजी से करवा सकु । आप लोग उनसे बात किजिये वो अच्छी महिला हैं, मेरा एसा विश्वास हैं, कि वो आपकी बात मान लेगी ।

पम्मी-काँता से बात करने का साहस वंहा उपस्थित ज्योतिषियों में से किसी में नही था । अब किसी पुरुष ज्योतिषि की हिम्मत नही हो रही कि वो कुछ बोलकर मिटिंग का सिलसिला जारी रखते । इसलिये अब जिम्मेदारी फिर महिलाओं पर आन पड़ी । एसे में लक्ष्मी परायी नामक महिला उठ खड़ी हुई । उसने पैनी नजर से बन्दा चहेता की तरफ देखा और बोली, 'मनुष्य को अपने चरित्र का ध्यान रखना चाहिये, चरित्र से ही आदमी की पहचान होती हैं ।'

बन्दा चहेता ने मन ही मन गाली दी, 'साली, अब इस पचपन की उम्र में होता तो कुछ हैं नही, चाहने वाला भी कोई बचा नही, एसे में चरित्र की बात नही करेगी तो क्या करेगी ।

दरअसल बन्दा चहेता और लक्ष्मी परायी में सदा से पम्मी-काँता को लेकर एक खुन्नस रही हैं । वे दोनो पम्मी-काँता को अपने फायदे के लिये ईस्तेमाल करना चाहते रहे हैं । लेकिन तिकड़मबाज बन्दा चहेता ने बाजी मार रखी थी और लक्ष्मी परायी उससे जलती रही थी ।

लक्ष्मी परायी का असली नाम लक्ष्मी परांजपे था । वो फिल्मों पर ज्योतिष-लेख लिखने का कार्य करती थी । सभी जानते थे कि उसके लेख फिल्मी पत्रिकाओं से नकल मारे हुऐ होते थे । उसमें ज्योतिष की किताबों के कुछ टोटके और उपाय अथवा कुण्डली का थोड़ा मिश्रण वो अपनी तरफ से करती थी । वो अक्सर कहती थी कि उसने कई फिल्मी लोगों को उनकी कुण्डली से धनवान बनाया था । हालाकि वो खुद दो-दो सौ रुपये के लिये प्रकाशन सस्थाओं के दरवाजों पर भिखमंगों की तरह भटकती रहती थी । एसा नही था कि प्रकाशन सस्थाये उसका पारिश्रमिक मार लेती थी बल्कि उसके साधारण लेख किसी काबिल ही नही होते थे । इस तरह उसके बड़बोलेपन से लोगों ने उससे कहा कि वो लक्ष्मी तो थी परन्तु दूसरो के लिये, अपने लिये उसका लक्ष्मी होना किसी काम का नही था । इस तरह उसका नाम 'लक्ष्मी परायी' पड़ गया । अब उसकी उम्र भी हो चली थी, जवानी में भी उससे कुछ खास नही हो पाया था । एक बार सम्मेलन में सम्मान पाने के लिये पम्मी-काँता के सामने वो लगभग रो पड़ी थी और पम्मी-काँता ने उसपर रहम खाकर उसे सम्मानित किया था । उसके टूटे दाँत, सफेद बाल और हमेशा गुटका चबाते रहने की उसकी आदत ने उसे अनाकर्षक बना दिया था । उसपर आज भी वो हष्टपुष्ट पुरुषो को देखकर लार टपकाने से बाज नही आती थी और चरित्र की बात वो जोरशोर से करती थी । 'नयन गिरपड़े' के पीछे तो वो हाथ धोकर पड़ी रहती थी परन्तु नयन गिरपड़े किसी ना किसी तरह अपनी इज्जत बचा लिया करता था । जब कभी भी वो बोलती थी तो अपने चरित्र की मिसाल के लिये नयन गिरपड़े का ही नाम लेती थी । हमेशा कहती थी कि, 'मेरे चरित्र के बारे जानना होतो नयन गिरपड़े से पुछ लो ।'

आज भी जब वो बोल रही थी तो बोलते बोलते उसने कहा, 'चरित्र इसांन की छवि बनाता हैं, जिससे उसका मान सम्मान बढ़ता हैं । हमारे चरित्र के विषय में जानना चाहें तो नयन गिरपड़ेजी से पुछ लें ।'

तभी फिजा में एक आवाज गुँजी, 'क्यों ? अभी तक आपने उनका मानमर्दन नही किया हैं क्या ?'

फिर दूसरी आवाज गुँजी, 'जल्दी किजिये हम भी लाईन में हैं ।'

फिर तीसरी आवाज गुँजी, 'बुढ़ी घोड़ी, लाल लगाम ।'

चौथी आवाज गुँजी, 'बैठ जाओं अम्मा, और चरित्रपाठ मत करो ।'

वो क्रोध से तमतमायें चेहरे से बोली, 'हाँ, हाँ मेरे पास इन बेहूदा बातों के लिये वक्त भी नही हैं ।' फिर वो भी बैठ गई ।

इसके बाद मोहिनी लम्पट नामक महिला उठी । उसका नाम मोहिनी सम्पत था मगर सबसे दगा, धोखा और इधर की उधर करने के कारण उसका नाम मोहिनी लम्पट पड़ गया था । उसके साथ एक नेपाली छोकरा भी था । जोकि असल में उसकी बिल्डींग का वाचमैन था । सब लोग कहते थे कि उसका उस नेपाली छोकरे के साथ

।। होली की रंगीन पिचकारी ।।

अवैध रिश्ता था और वो हर जगह उसके साथ होता था । यंहा तक कि सम्मेलनों के दौरान कभी कभी दोनो एक ही रुम में साथ साथ सोते थे । बहरहल वो उठी और उसने बोलना शुरु किया, 'पुरानी संस्थायें अब तक पुराना ही राग अलाप रही हैं, वक्त बदल रहा हैं, हम लोगों को एक नयी सस्था बनानी चाहिये ताकि नयी चुनौतियों से सामना किया जा सके । मेरी नेपाल के ज्योतिषियों से बात हो गई हैं और मैं एक नयी सस्था का निर्माण करने जा रही हुं जिसका अध्यक्ष मैं माताराम को बना रही हुं और आप लोग भी इसके सदस्य बनने के लिये आमंत्रित हैं । कहते हुऐ उसने उस नेपाली छोकरे की तरफ इशारा कर दिया ।

तुरन्त ही उस नेपाली छोकरे माताराम ने हाथ जोड़ दिये और ठेठ नेपाली अंदाज में बोला, 'ओ शाब, हम अध्यक्ष बनने को तैयार हैं, लेकिन अभी हम कंवारा हैं । मैडम मोहिनी बोलता हैं कि हमारी कुण्डली में सादी का योग नही हैं । आप शब, शाब लोग बहुत बड़ा ज्योतिषि लोग हैं, आप कृपा करके हमारा कुण्डली देखों और हमको कोई उपाय बताओं, शाब हमको सादी करने का हैं, हम सादी करेगा ।'

सभी लोग हैरानी से उसकी तरफ देखने लगे और मोहिनी लम्पट भी क्रोध से उस नेपाली छोकरे की तरफ देखने लगी । उस कमबख्त ने सारा गुड़ गोबर करके रख दिया था । बहुत सावधानी से मोहिनी लम्पट ने ये योजना बनायी थी और ये सुनहरा मौका चुना था । सभी लोग पम्मी-काँता के विरोध में थे और एसे में नयी सस्थाा बनाने का अच्छा मौका था । उसने उस नेपाली माताराम को इसलिये चुना था कि वो बेवकूफ उसके कहे में रहेगा और अध्यक्ष होने के बावजूद सारा रिमोट उसके हाथ में रहेगा । कुछ गड़बड़ भी हुई तो सारा दोष उस नेपाली के मत्थें मढ़कर वो साफ बच निकल सकती थी । परन्तु 'नादां की दोस्ती जी की जलन' वाली कहावत सिध्द हो गई । वो क्रोध में भरी आगे बढ़ी और उसने उस नेपाली छोकरे के गाल पर चाँटा रसीद कर दिया ।

तभी एक ज्योतिषि उठा और जोर से बोला, 'उसको क्यों मारती हो, पहले उसकी शादी करवाओं फिर उसे अध्यक्ष बनाओ याँ फिर तुम ही उससे शादी करलो ।'

सुनकर मोहिनी लम्पट और आगबबूला होगई और उस ज्योतिषि की तरफ बढ़ी और तड़ाक से अगला चाँटा उसे रसीद कर दिया । जवाब में उस ज्योतिषि के समर्थक ने उठकर एक चाँटा मोहिनी लम्पट के गाल पर रसीद कर दिया । फिर क्या था । एक महिला के अपमान का बदला चुकाने के लिये सभी महिलायें आगे बढ़ी और उस ज्योतिषि के समर्थक को मारने दौड़ी । ये देखकर पुरुषों का आत्मसम्मान भी जाग उठा और वे लोग महिलाओं की तरफ लपके और घमासान मच गया । फिर कौन किसको मार रहा था, कुछ पता नही चल रहा था । उधर बन्दा चहेता किसी को फोन करने में व्यस्त हो गया ।

एसी ही अफरातफरी के माहौल में नयन गिरपड़े ने वंहा प्रवेश किया । उसके कन्धें पर एक बड़ा सा कार्टन रखा था । जिसे वंहा आकर उसने उतार कर रखा । उसके पीछे पीछे पम्मी-काँता ने भी वंहा प्रवेश किया ।

घमासान के बाद अब वंहा शाँती छा गई थी । पुरुष ज्योतिषि अपने घायल अंगों को सहलाने में लगे थे और महिलायें अपने फटे कपड़े संभालने में लगी थी । एसे में पम्मी-काँता मंच पर चढ़ गई और बोली, 'मुझे दुख हैं कि मिटिंग का एसा हश्र हुआ । दरअसल ये मिटिंग मैंने ही करवायी थी । आप सब लोगों को अलग अलग जगहों पर ये ग्रहों के यन्त्रों से छपी पिचकारियां बाँटने में परेशानी होनी थी । इसलिये आप सबको एक जगह इकटठा करना जरुरी था । इसी के चलते इस मिटिंग का आयोजन मैंने किया था । इसमें मोहिनी लम्पट और बन्दा चहेता ने मेरी भरपुर मदद की हैं । मैं उन दोनो की शुक्रगुजार हुं । जो हो गया उसे भूल जायें, पिचकारियां मैं ले आयी हुं, आप सब लोग अपने अपने हिस्से के कार्टन लेलें और आम जनता में इसे बेचने का प्रयत्न करें । पैसे लौटाने की जल्दबाजी ना करें, हम लोग आपस में एक दूसरे के शुभ चिंतक हैं । पैसे कंहा भागे जा रहे हैं, जब ये पिचकारियां बिक जाये तो पैसे आराम से लौटा दिजियेगा । बाहर ट्रक में सबके कार्टन रखें हैं अपना अपना लेलें और अपना नाम पता बन्दा चहेताजी को लिखवा दें ।'

क्या महिलायें और क्या पुरुष । सब लोग आज्ञाकारी बालकों की तरह उठे और बाहर जाकर पिचकारियों से भरा अपना अपना कार्टन लेकर चलते बने । बन्दा चहेता ने सबके नाम नोट कर लिये । किसी की हिम्मत नही थी कि कोई पम्मी-काँता से कुछ पुछता । सभी को ज्योतिष जगत में जीना था । पानी में रहकर मगरमच्छ से कौन बैर मोल लेता ।

बहरहाल दस रुपये की पिचकारी पर ग्रहों के यन्त्र छपवाकर पम्मी-काँता ने ज्योतिषियों को सौ-सौ रुपये में बेची । प्रसिध्दी और सम्मान के मारे ज्योतिषि उन पिचकारियों को इधर उधर घुमाते रहे परन्तु बेच ना सके, जनता अब सयानी हो गई थी । इस तरह धीरे धीरे उन लोगो ने अपनी जेब से पैसे भर दिये परन्तु पम्मी काँता को उन्हौने नाराज नही किया ।

मिटिंग के बाद उस दिन रात को पम्मी ने नयन से कहा कि वो जा रही हैं परन्तु वो नही गई और उस नेपाली छोकरे के साथ होटल इम्पिरियल के कमरा नं ४२० में ठहरी । दोनो ने ही मिलकर खूब जश्न मनाया । नेपाली छोकरा बिना शादी के ही प्रसन्न हो गया ।

नयन गिरपड़े भी कम नही था । उसने बन्दा चहेता को पकड़ा और वे दोनो एक अलग होटल में ठहरे तथा उन दोनो ने भी उस रात जश्न मनाया ।

सो इस तरह मिटिंग, गुप्त मिटिंग पुर्ण हुई । सभी लोग अपने अपने काम पर लग गये ।

वो दो तीन ज्योतिष के सच्चे विद्वान अभी तक वंही थे, मारकुटाई और घमासान से वे लोग दूर ही रहे थे । और अब भी इस आशा में थे कि कोई मिटिंग होगी और उन्हे बोलने का मौका मिलेगा । मेरे ख्याल से उनकी ये आशा तो अब स्वंय ईश्वर ही आकर पुर्ण कर सकता था । समाप्त ।